मानव जीवन में फलित ज्योतिष की उपयोगिता

रंजीत दूबे *

मानव स्वभाव से ही अन्वेषक प्राणी है। वह संसार की प्रत्येक वस्तु के साथ जीवन का तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। अपनी इसी प्रकृति के कारण वह शास्त्रीय एवं व्यावहारिक ज्ञान द्वारा प्राप्त अनुभवों को ज्योतिष की कसौटी पर कसकर देखना चाहता है कि ज्योतिष का मानव–जीवन में क्या स्थान है? ज्योतिष विज्ञान क्या है? मानव उसमें अधिक अभिरुचि क्यों लेता है? इसलिए कि वह देखता है कि प्रकृति में निहित शक्ति उसके जीवन पर महान् प्रभाव डाल रही है। एक व्यक्ति धनवान – गृह में जन्म लेता है तो दूसरा भिखारी की झोपड़ी में। एक अपना जीवन दुःख पूर्ण व्यतीत करता है तो दूसरा सानन्द। इसका कारण क्या है? साधन है ज्योतिर्विज्ञान। इस विज्ञान के अंतर्गत उस समूची प्रक्रिया का प्रतिपादन आ जाता है, जिससे मनुष्य के जीवन में आने वाले हर्ष– विषाद, हानि–लाभ, उत्थान–पतन आदि को पहले से ही जाना जा सकता है। हमारे ऋषि महर्षियों एवं पूर्वाचार्यों ने भी ज्योतिः पदार्थों की गति स्थिति आदि के अतिरिक्त आकाश में घटने वाली ग्रहण–जैसी आश्चर्य जनक घटनाओं का भी सतत् निरीक्षण करके प्राणियों पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव का विश्लेषण कर ज्योतिषशास्त्र के मानक सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया। उनके द्वारा रचित ज्योतिषशास्त्र के सिद्धांत रूपी अनमोल रत्न ज्योतिष शास्त्र की अमूल्य धरोहर हैं। वेद की विभुता विश्व में विख्यात है। उसके छः अंगो में ज्योतिष नेत्र होने के कारण प्रधान माना गया है। देवर्षि नारद ने कहा है–

सिद्धान्तसंहिताहोरारूपं स्कन्धत्रात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम।।
विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्म न सिद्धयति।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।।[1]

अर्थात् सिद्धान्त,संहिता और होरा (जातक) तीन स्कन्धरूप ज्योतिषशास्त्र वेद का निर्मल और दोषरहित नेत्र कहा गया है। इस ज्योतिष शास्त्र के बिना कोई भी श्रौत और स्मार्त कर्म सिद्ध नहीं हो सकता। अतः ब्रह्मा ने संसार के कल्याणार्थ सर्वप्रथम ज्योतिषशास्त्र का निर्माण किया।

अतः स्पष्ट है कि संसार में घटने वाली समस्त घटनाओं का ज्ञान ज्योतिषशास्त्र के द्वारा ही होता है। प्राणियों के जन्म से मरणपर्यन्त समस्त सुख–दुःख ग्रहों के अधीन होते हैं। आकाश में व्यक्त और अव्यक्त अनेक ग्रह हैं

*** शोधछात्र, ज्योतिष विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।**

उनमें सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि– ये सात ग्रह प्रत्यक्ष फल देने वाले हैं। इनमें भी सूर्य प्रधान है क्योंकि परब्रह्म परमात्मा अपनी शक्ति (प्रकृति)– के द्वारा चराचर विश्व की रचना करने के समय में सर्वप्रथम आकाश की, तदनन्तर सूर्य की सृष्टि करते हैं। पुनः सूर्य के ही द्वारा अन्य चन्द्र आदि ग्रहों एवं वायु, अग्नि,जल और पृथ्वी तथा पृथिवीस्थित प्राणियों की सृष्टि, पालन और प्रलयरूप क्रिया करते हैं। इसलिए वेद में सूर्य को ही चराचर जगत् का आत्मा माना जाता गया है– **"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च"**[2] तथा–

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।[3]

अनन्तर सूर्यादि खेचरों के रश्मि–प्रभाव से अन्य चर और अचर की सृष्टि होती है। बृहस्पति ने कहा है कि–"**ग्रहाधीनं जगत्सर्वम्**" अर्थात् यह समस्त संसार ग्रहों के अधीन है और मानव एवं पशु–पक्षी आदि जीव भी ग्रहों के ही अधीन हैं। काल का भी ज्ञान ग्रहों के अधीन है और कर्म का फल ग्रहों के द्वारा ही मिलता है। संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय– ये सभी ग्रहों के ही अधीन हैं। इसी प्रकार समस्त पुराणों में मुनियों ने सूर्यादि ग्रहों को ही जन्म, पालन और मरण का कारण बतलाया है।

वशिष्ठ ने अपनी संहिता में कहा है कि समस्त उच्चावच प्राणियों की सृष्टि, आकाशस्थ उच्चावच ग्रहों की रश्मिवश ही होती है। उनमें सूर्य और चन्द्रमा के बलानुसार पुरुष और स्त्री की सृष्टि होती है। जैसे किसी के गर्भाधान के समय में सूर्य अधिक बली रहता है तो पुरुष का जन्म होता है और चन्द्रमा अधिक बली रहता है तो स्त्री का जन्म होता है। यदि दोनों का तुल्य बल (समानबल) रहता है तो उस गर्भाधान से नपुंसक का जन्म होता है।

सोमात्मिकाः स्त्रियः सर्वाः पुरुषा भास्करात्मकाः।
तासां चन्द्रबलात् स्त्रीणां नृणां सर्वं हि सूर्यतः।।

संसार में समस्त स्त्री चन्द्रमा के अंश से और पुरुष का शुभाशुभ सूर्य के अंश से उत्पन्न होते हैं। अतः स्त्री का शुभाशुभ चन्द्रमा के अनुसार और पुरुष का शुभाशुभ सूर्य के अनुसार होता है।इस प्रकार शास्त्रों और पुराणों में ग्रहों की महत्ता विस्तृत रूप से वर्णित है। इस प्रकार शास्त्रों और पुराणों में काल को ही परब्रह्म परमात्मा कहा गया है–**लोकानामन्तकृत्कालः कालोऽन्यः कलनात्मकः।**[4]

काल भगवान् के दो रूप हैं– एक समस्त विश्व को उत्पन्न करने वाला और दूसरा संहार करने वाला है, जो कि अव्यक्त,निर्गुण, निराकार और अनन्त है दूसरा कलनात्मक अर्थात् विपल, पल, दिन, महीना, वर्ष, युग इत्यादि व्यवहारार्थ गणना करने योग्य है, जो कि व्यक्त सगुण और साकार है।

ज्योतिषशास्त्र के प्रणेता महर्षियों ने आकाशस्थ नक्षत्रचक्र (भगोल)– के तुल्य बारह विभागों को ही मेषादि नाम से बारह राशियाँ कहा है। ये मेषादि राशियाँ कालभगवान् के मस्तक से लेकर चरण तक क्रम से अंग हैं।

शीर्षमुखबाहुहृदयोदराणि कटिवस्तिगुह्यसंज्ञकानि।
उरू जानू जंघे चरणाविति राशयोऽजाद्याः।।[5]

गर्भाधान अथवा जन्म समय में जिस अंगविभाग (राशि) – मे पापग्रह रहता है, वह विकारयुक्त होता है।

कालनरस्यावयवान् पुरुषाणां चिन्तयेत् प्रसव काले।
सदसद्ग्रहसंयोगात् पुष्टान् सोपद्रवांश्चापि।।[6]

मेषादि राशियाँ कालपुरुष के सिर इत्यादि अंग होती हैं। कालपुरुष का मेष सिर, वृष मुख, मिथुन दोनों बाँह, कर्क राशि हृदय, सिंह पेट, कन्या कटि, तुला बस्ति(नाभि और लिंग के बीच ता स्थान) वृश्चिक लिंग, धनु उरू, मकर जानु, कुम्भ जंघा और मीन दोनों पैर होते हैं। इनका प्रयोजन यह है कि जन्म के समय में जो राशि शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, वह अंग अत्यन्त पुष्ट होता है और यदि राशि पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो, उस राशि के अंग में पीड़ा, घाव इत्यादि होता है। यदि मिश्र ग्रह (शुभाशुभ ग्रह)– से दृष्ट या युक्त हो तो उनके बलादि के तारतम्य से उस–उस अंग में अच्छा या बुरा फल समझना चाहिए। इस प्रकार सूर्यादि ग्रह ही काल भगवान् के आत्मादि अन्तरंग हैं। यथा–

आत्मा रविः शीतकरस्तु चेतःसत्त्वं धराजः शशिजश्च वाणी।
ज्ञानं सुखं चन्द्रगुरुर्मदश्चशुक्रः शनिः कालनरस्य दुःखम्।।
आत्मादयो गगनगैर्बलिभिर्बलवत्तराः।
दुर्बलैदुर्बला ज्ञेया विपरीतः शनिः स्मृतः।।[7]

अर्थात् काल भगवान् के सूर्य आत्मा,चन्द्रमा मन, मंगल सत्त्व, बुध वाणी, गुरु ज्ञान और सुख हैं तथा शुक्र मद (कन्दर्प) और शनि दुःख हैं। जन्म समय में ये सूर्यादि ग्रह बलवान् हों तो प्राणियों के आत्मादि बलवान् होते हैं। अतः सूर्य आदि छः ग्रहों के प्रबल होना अशुभ (विपरीत) माना गया है क्योंकि शनि दुःखरूप है वह जितना निर्बल रहता है उतना दुःख अल्प होता है। इसी प्रकार सूर्यादि ग्रह भी काल भगवान् की सत्त्व आदि प्रकृति हैं–

चन्द्रार्कजीवा ज्ञसितौ कुजार्कीयथाक्रमं सत्वरजस्तमांसि।।[8]

बृहस्पति, चन्द्रमा, और सूर्य– ये तीन सत्त्वगुणी हैं। शुक्र और बुध– ये दोंनों रजोगुणी हैं। शनि और मंगल ये दोनों तमोगुणी हैं। ग्रह अपनी प्रकृति के अनुसार मनुष्यों की प्रकृति बनाते हैं।

एते ग्रहा बलिष्ठाः प्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम्।
कुर्युदेहं नियतं बहवश्च समागता मिश्रम् ।।[9]

गर्भाधान में इन ग्रहों में जो बलवान् रहता है, वह अपने स्वरूप के समान ही गर्भस्थ जीव का स्वरूप बनाता है। यदि कोई ग्रह बलवान् हों तो उन

सभी के मिश्रित स्वरूप के सदृश अर्भक (बालक)– का स्वरूप होता है।ग्रहों के द्वारा ही प्राणियों के पूर्व और अग्रिम जन्म की भी स्थिति ज्ञात होती है। यथा–

गुरुरुडपतिशुक्रौ सूर्यभौमौ यमज्ञौ
विबुधपितृतिरश्चो नारकीयांश्च कुर्युः।
दिनकरशशिवीर्याधिष्ठितास्त्यंशनाथाः
प्रवरसमकनिष्ठास्तुंगहृासादनूके।।[10]

प्राणियों के जन्म–समय में सूर्य और चन्द्रमा में जो बलवान् हो, वह यदि गुरु के त्र्यंश (द्रेष्काण)– में हो तो जातक को पूर्वजन्म में देवलोकवासी, यदि चन्द्र और शुक्र के त्र्यंश में हो तो पितृलोकवासी (चन्द्रलोकवासी), यदि सूर्य अथवा मंगल के त्र्यंश में हो तो मर्त्यलोकवासी और यदि शनि या बुध के त्र्यंश में हो तो नरलोक वासी समझना चाहिए। उक्त त्र्यंशपति ग्रह अपने उच्चस्थान, मध्यस्थान या नीचस्थान में हो तो उक्त लोक में भी जातक को यथाक्रम उत्तम, मध्यम और अधम श्रेणी का समझना चाहिए। इसी प्रकार जीव के मरणकाल में भी उक्त त्र्यंशपति की स्थिति के अनुसार देवलोक, पितृलोक, मर्त्यलोक अथवा नरलोक में अग्रिम जन्म समझना चाहिए।

इस प्रकार चराचर प्राणियों के जन्म, स्थिति और मरणपर्यन्त सुख–दुख सूर्यादि ग्रहों के आधार पर ही वेद–वेदांगों में वर्णित हैं। भारतीय ऋषियों ने अपनी साधन ,लगन, परिश्रम एवं दिव्य ज्ञान से ग्रहों की गति का अध्ययन करके जो निष्कर्ष निकाले, वे वस्तुतः प्रामाणिक होने के साथ–साथ इस बात के सूचक भी हैं कि इन सिद्धांतों,नियमों एवं तथ्यों पीछे ऋषियों की सैकड़ों–हजारों वर्षों की तपस्या एवं अनुभूति है। मानव–जीवन के छोटे–से–छोटे तथ्य पर भी इन ऋषियों ने विचार तथा अनुभव प्राप्त किया है। हानि– लाभ, सुख–दुःख, जीवन मरण आदि का विवेचन करने के साथ–साथ उन्होंने ग्रहों की गति एवं स्थिति के आधार पर आवागमन पर भी प्रकाश डाला है। बालक जिस समय जन्म लेता है, उस समय का शोधनकर अक्षांश –देशान्तर –संस्कार करने के पश्चात् बालक की जन्मकुण्डली बनायी जाती है। उस समय के ग्रहों की स्थिति के अध्ययन के फलस्वरूप यह ज्ञात किया जा सकता है कि बालक किस योनि से आया है और मृत्यु के पश्चात् उसकी क्या गति होगी।

सन्दर्भ–

1.नारद संहिता,अ.1 श्लोक ४,७,
2.यजुर्वेद ७,४२
3.ऋग्वेद १०,१६०,३
4.सूर्यसिद्धान्त १.१०
5.लघुजातक १.४
6.लघुजातक १.५
7.लघुजातक १.१–२
8.बृहज्जातक २.७
9.लघुजातक ४.८
10.बृहज्जातक २५.१४